PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 11, ISSUE 06

"शाहजी राजे का स्वराज्य के लिए योगदान"

श्री. नितीन गणपत जैद
विद्यावाचस्पती- संशोधक विद्यार्थी
निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर
राजस्थान भारत

डॉ. शिल्पा गोयल
संशोधन मार्गदर्शक:
निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर
राजस्थान भारत

सारांश:

शाहजी राजे भोसले (1594-1664) एक प्रमुख मराठा सेनापति थे और छत्रपति शिवाजी महाराज के पिता थे। उन्होंने अहमदनगर सल्तनत, बीजापुर सल्तनत और मुगल साम्राज्य की सेवा की। शाहजी राजे ने मराठा साम्राज्य की नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और बाद में तंजौर, कोल्हापुर और सतारा जैसी रियासतों को भोंसले परिवार की विरासत में स्थापित किया।

महाबली शाहजी राजे

परिचय-

मालोजीराजे भोसले के पुत्र शाहजीराजे का जन्म १८ मार्च १५९४ ई॰ को हुआ था| शाहजी प्रकृति से साहसी, चतुर, साधन-सम्पन्न तथा दृढ़निश्चयी थे। व्यक्तिगत स्वार्थ से प्रेरित होते हुए भी, पृष्ठभूमि के रूप में, इन्हें महाराष्ट्र के राजनीतिक अभ्युत्थान का प्रथम चरण माना जा सकता है। इनकी प्रथम पत्नी जिजाबाई से महाराष्ट्र के निर्माता शिवाजीराजे का जन्म हुआ तथा दूसरी पत्नी तुकाबाई से तंजोर राज्य के संस्थापक एकोजी का।

शाहजी का वास्तविक उत्कर्ष निजामशाही वज़ीर फतहखाँ के समय से प्रारम्भ हुआ। निजामशाह की हत्या के बाद, राज्य की संकटाकीर्ण परिस्थिति में, मुगलों की नौकरी छोड़ शाहजी ने दस वर्षीय बालक मुर्तजाशाह द्वितीय को सिंहासनासीन कर (१६३२) मुगलों से तीव्र संघर्ष किया। निजामशाही राज्य की समाप्ति पर इन्होंने बीजापुर राज्य का आश्रय लिया (१६३६)। १६३८ में हिंदू राजाओं का दमन करने के लिए शाहजीराजे को भी कर्नाटक भेजे गए; किन्तु १६४८ में उनसे संपर्क स्थापित करने के संदेह में सेनानायक मुस्तफाखाँ ने इन्हें बंदी बना लिया। १६४९ में आदिलशाह ने इन्हें विमुक्त कर पुनः कर्नाटक भेजा। उन्होंने गोलकुंडा के सेनानायक

मीरजुमला को परास्त किया (१६५१)। शिवाजी की बढ़ती शक्ति से आतंकित हो, बीजापुर पर शिवजी के आक्रमणों को शाहजी द्वारा स्थगित कराने का प्रयत्न किया गया (१६६२)। तभी, प्रायः बारह वर्ष बाद, पिता-पुत्र की भेंट हुई; तथा शाहजी और जीजाबाई के टूटे सम्पर्क पुनः स्थापित हुए। २३ जनवरी १६६४, को शिकार खेलते समय घोड़े पर से गिरने से शाहजी की मृत्यु हो गई।

अहमदनगर की निज़ामशाही में:

मालोजीराजे भोसले और उनके भाई विठोजीराजे भोसले १५७७ में सिंदखेड़ में लखुजीराजे जाधव की नोकरी में शामिल हुए थे। उसके बाद, शाहजी के पिता मालोजीराजे ने लखुजीराजे जाधव की नोकरी छोड़ दी और विज्ञापन १५९९ में अहमदनगर के निज़ाम की नौकरी कर ली।

निज़ामशाही का अंत:

निज़ामशाही के वज़ीरों, फ़तेह खान और जहान खान ने निज़ाम को मार डाला, और शाहजी राजा को निज़ामशाही के लिए भर्ती किया। इस बीच, शाहजी राजा ने निज़ामशाही के सभी आदमियों को मार डाला। मकसद यह था कि निज़ामशाही का कोई वारिस न हो। फिर शाहजी राजा ने निज़ाम के एक छोटे रिश्तेदार मुर्तज़ा को गद्दी पर बिठाकर खुद ही राज संभाल लिया, और मानो खुद पर एक छत्र राज कर लिया। यह घटना अहमदनगर ज़िले के संगमनेर तालुका में पेमगिरी किले में हुई। उनका आज़ाद राज लगभग 3 साल तक चला। उन्होंने मुर्तज़ा की माँ को उनकी सुरक्षा की ग्वाही दी।

जब दिल्ली के बादशाह शाहजहाँ ने निज़ामशाही को खत्म करने के लिए ४८००० सैनिक भेजे, तो आदिलशाह डर गया और शाहजहाँ से मिल गया। शाहजी और निज़ामशाही बच नहीं पाए, लेकिन शाहजीराजे ने जमकर लड़ाई जारी रखी। इस बीच, छोटा मुर्तज़ा शाहजहाँ के हाथों में पड़ गया। फिर, अपनी सुरक्षा और अपनी माँ से किए वादे के लिए, उन्होंने शाहजहाँ से एक संधि की। इस संधि के तहत, मुर्तज़ा शाहजहाँ के पास सुरक्षित रहेगा और शाहजी आदिलशाही चले जाएँगे। शाहजहाँ ने एहतियात के तौर पर शाहजीराजा को दक्षिण में बैंगलोर का जहाँगीर दे दिया। बैंगलोर शहर की स्थापना १५३७ में विजयनगर साम्राज्य के एक जागीरदार केम्पे गौड़ा-१ ने की थी। उन्होंने विजयनगर साम्राज्य से आज़ादी की घोषणा की थी। १६३८ में, बैंगलोर पर आदिलशाही बीजापुर सेना ने राणादुल्ला खान की कमान में, सेनापति शाहजी भोसले के साथ मिलकर कब्ज़ा कर लिया, जिन्होंने केम्पे गौड़ा-३ को हराया। और बैंगलोर शाहजी को जागीर (संपत्ति) के रूप में दे दिया गया। अपने शासन के दौरान, शाहजी राज ने निज़ाम शाही से पुणे परगना पर कब्ज़ा करके अपने पास रख लिया था।

शाहजी राज को बैंगलोर क्षेत्र बहुत पसंद था। शाहजी राज और उनके सबसे बड़े बेटे संभाजी राज ने यहीं अपने मन में स्वराज्य के कल्पना को आकार देने का फैसला किया। शाहजी शुरू में एक अच्छे व्यवस्थापन और एक ताकतवर योद्धा थे। उन्होंने दक्षिण के राजाओं को हराकर दक्षिण में आदिलशाही को बढ़ाया। लेकिन ऐसा करते समय, उन्होंने हारे हुए राजाओं को सज़ा या शारीरिक सज़ा नहीं दी और उन्हें मांडलिक बना दिया। इसलिए, जब ज़रूरत पड़ी, तो ये राजा शाहजी की मदद के लिए आए।

हिंदू स्वराज्य:

शहाजीराज ने अपने बेटे शिवाजी महाराज को अपनी जहांगीरी को आज़ादी से चलाने के लिए पुणे भेजा और स्वराज्य की स्थापना के लिए बहुत अच्छे हालात बनाए। शिवाजीराज के साथ दादोजी कोंडदेव, बाजी पासलकर, रघुनाथ बल्लाल अत्रे, कान्होजी जेधे नाइक और सतार के शिंदे देशमुख भी पुणे आए। शहाजीराज ने शिवाजी को राज्य के मैनेजमेंट के लिए ज़रूरी शाही मुहर भी दी।

शिवाजी की बढ़ती घौड-दौड को रोकने के लिए और यह शक होने पर कि शहाजीराज उनसे मिला हुआ है, आदिल शाही ने बाजी घोरपड़े, मांबाजी भोसले, बाजी पवार, बालाजी हैबतराव, फतेह खान, आजम खान की मदद से शहाजीराज को धोखा दिया और उन्हें कर्नाटक में जिंजी के पास कैद कर दिया। शहाजीराज को बीजापुर से

ज़ंजीरों में बांधकर दरबार में लाया गया। वह दिन था २५ जुलाई, इ.स १६४८ यह जानने पर, शिवाजी महाराज ने कुटनीती तरीके से काम करते हुए, दिल्ली में मुगल सुल्तान शाहजहाँ को एक चिट्ठी भेजी। उन्होंने कहा कि वह खुद और उनके पिता शाहजी राजे दिल्ली के शासक की सेवा करना चाहते थे। बदले में, उन्होंने एक शर्त रखी कि शाहजी राजे को बीजापुर की कैद से रिहा कर दिया जाए। इस तरह, शिवाजी महाराज ने शाहजी राजे को रिहा करने के लिए दिल्ली के बादशाह को रिश्वत दी थी। यह कोशिश सफल रही। शाहजी राजे को १६ मई, १६४९ को सम्मान के साथ रिहा कर दिया गया। जब अफ़ज़ल खान सत्ता में आया, तो शाहजी राजे ने बीजापुर के बाहर १७००० सैनिकों को रखा था, क्योंकि उन्हें अफ़ज़ल खान के धोखे के बारे में पता था।

एक अनुभवी सैन्य नेता:

शाहजी ने विभिन्न शासकों के लिए काम किया और छापामार युद्ध के शुरुआती प्रतिपादकों में से थे।

शिवाजी महाराज के पिता:

वे मराठा साम्राज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराज के पिता थे। उन्होंने शिवाजी को युद्धकला और प्रशासन की शिक्षा दी।

मराठा साम्राज्य की नींव रखी:

उन्होंने भोंसले परिवार को प्रतिष्ठा दिलाई और मराठा साम्राज्य की नींव रखी।

विभिन्न क्षेत्रों में सेवा:

शाहजी ने अपने जीवनकाल में अलग-अलग समय पर अहमदनगर सल्तनत, बीजापुर सल्तनत और मुगल साम्राज्य में सैन्य सेवा की।

सन्दर्भ:

१. बाल कृष्ण 1932, p. 58.

२. देशपांडे, एस. आर. मनस्विनी इन द मराठा एम्पायर, पुणे, 2005

३. "राजा शिवछत्रपति", लेखक: बाबासाहेब पुरंदरे

४. "http://en.wikipedia.org/wiki/Shahaji"

५. स्वराजजननी जीजामाता सीरीज़